Volume: 1 Issue: 3 Pages: 37-38

International Journal of Research in Academic World

E-ISSN: 2583-1615
Impact Factor: 3.133

Received: 15/October/2021 Int. J Res. Acad. World. 2021; 1(3):37-38 Accepted: 23/November/2021

आधुनिक भारतीय शिक्षा का समाजशास्त्रीय अध्ययन

[*1]Dr. Sunil Samag

[*1]Assistant Professor & Head, Department of Sociology, Sant Ramdas College, Ghansawangi, Jalna, Maharashtra, India.

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन आधुनिक भारतीय शिक्षा व्यवस्था समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत करती है। इसका मुख्य उद्देश्य वर्तमान कालिक शिक्षा व्यवस्था के प्राचीनतम स्वरूप की समीक्षा करना के साथ साथ आधुनिक सामाजिक परिदृश्य में शिक्षा के योगदान एवं महत्व को प्रदर्शित करना भी है। अत यह अध्ययन इस बात की समीक्षा करता है कि आधुनिक शिक्षा समाज के प्रत्येक नागरिक के विकास पर केंद्रित व्यबस्था है।

शब्दकोषः वैदिक शिक्षा, आधुनिक शिक्षा, स्वामी विवेकानंद, फ्राबेल

प्रस्तावना

शिक्षा ही समाज का दर्पण होती है। शिक्षा व्यवस्था किसी भी देश के विकसित होने का शुद्ध मानक हो सकती है। शिक्षा न केवल मनुष्य का चारित्रिक विकास ही करती है बल्कि यह मनुष्यता का भी निर्माण करती है। शिक्षा एवं समाज एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। सामाजिक परिवर्तनों पर शिक्षा का साफ प्रभाव देखा जा सकता है। वर्तमान में भारतीय परिवेश में निजी विद्यालयो की संख्या में उतरोतर वृद्धि होती ही जा रही है जो इस बात के संकेत हैं कि शिक्षा व्यवस्था एक उभरता हुआ जगत बनने की राह की ओर अग्रसर होता जा रहा है। चूंकि शिक्षा मनुष्य में उस भावना का विकास करती है जिससे समाज में सम्मानित स्थान प्राप्त कर सकता है।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार, "मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।"

समाजशास्त्रियों के मतानुसार, शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया मानी जाती है क्योंकि इनके अनुसार समाज के अस्तित्व पर ही शिक्षा का अस्तित्व निर्भर करता है।।

फ्राबेल के अनुसार, "शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे बालक की जन्मजात शक्तियाँ एवं गुण प्रकट होते हैं।

अध्ययन उद्देश्य

यह अध्ययन निम्न उद्देश्यों पर आधारित है।

1. आधुनिक भारतीय शिक्षा व्यवस्था की पृष्ठभूमि का पुनरावलोकन करना
2. आधुनिक भारतीय शिक्षा का समाजशास्त्रीय अध्ययन करना।

अध्ययन विधि

यह अध्ययन प्रमुख रूप से द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है जिसके अंतर्गत उद्देश्यो की पूर्ति हेतु विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

भारतीय शिक्षा की पृष्ठभूमि

आधुनिक भारतीय शिक्षा का जो स्वरूप आज मौजूद है यह सर्वदा ही ऐसा नही था बल्कि आधुनिक शिक्षा व्यवस्था प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था का ही परिवर्तित एक रूप है। अत आधुनिक शिक्षा प्रणाली को समझने हेतु प्राचीन वैदिककालीन शिक्षा की पृष्ठभूमि को समझना अति आवश्यक है। प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था को वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था के रूप में जाना गया है। अतरू वैदिक कालीन शिक्षा का अंतिम लक्ष्य मानव को सत्य का ज्ञान करवाना तथा मोक्ष प्राप्ति हेतु शिक्षित करना था। वैदिक कालीन शिक्षा को आधुनिक शिक्षा की नींव का पत्थर कहा जाता है। क्योंकि यह शिक्षा हमारी संस्कृति पर आधारित थी। भारतीय शिक्षा व्यवस्था की प्राचीनता तथा प्रसिद्धि के संबंध में एफ. डब्ल्यू. थॉमस कहते हैं कि, "There has been no country eÛcept india where the love of learning had so early an origin or has eÛcersied so lasting and powerful influence" विश्व मे ऐसा कोई देश नही है जहा ज्ञान के प्रति प्रेम इतने प्राचीन समय से प्रारंभ हुआ हो जितना भारत मे अथवा जिसने इतना स्थायी और शक्तिशाली प्रभाव उत्पन्न किया है जितना भारत ने। वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत सर्वप्रथम ग्रंथो के रूप मे वेदो की रचना हुई। जिसके अंतर्गत सबसे प्राचीन वेद के रूप मे ऋग्वेद अस्तित्व मे आया जिसका निर्माण लगभग 1200 ईसा पूर्व माना गया है। इसके अतिरिक्त वैदिक कालीन शिक्षा प्रमुख उद्देश्यों में ज्ञान का विकास करना, नैतिक चरित्र का निर्माण करना, जीविका उपार्जन तथा कला कौशल से संबंधित ज्ञान को संवर्धित करना, आध्यात्मिक विकास करना तथा संस्कृति की सुरक्षा तथा संरक्षण हेतु शिक्षा प्रदान करना था। इस काल में शिक्षण कार्य मुख्य रूप से मौखिक विधि द्वारा संपन्न किया जाता था। साथ ही भाषा के ज्ञान के उद्देश्य से अनुकरण विधि कला एवं कौशल के विकास हेतु अभ्यास तथा प्रदर्शन में विधि का प्रयोग किया जाता था। सामान्य तौर पर इस काल की शिक्षा में शिक्षार्थियों की शंका समाधान हेतु वाद विवाद तथा प्रश्नोत्तरी विधि का प्रयोग भी देखने को मिलता है। वैदिक काल में अति विद्वान, स्वध्यायी तथा धर्म परायण व्यक्ति ही शिक्षक का पद ग्रहण कर सकता था। वैदिक काल में शिक्षकों को देवों के रूप में प्रतिष्ठित किया जाता था। समाज में उनका स्थान पर सर्वोच्च होता था। हालांकि वैदिक काल में स्त्रियों की शिक्षा पर

***Corresponding Author:** Dr. Sunil Samag

अत्यधिक ध्यान नहीं दिया गया अथवा वर्णों के आधार पर स्त्री शिक्षा का प्रचलन था। शुर्दो की भी यही स्थिति इस काल में देखने को मिलती है।

शूद्रों को छोड़कर शेष तीनों वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) इस काल में विद्या अध्ययन कर सकते थे। वे किसी भी आचार्य के शिष्य हो सकते थे। चित्र बनाने के लिए प्रारंभिक संस्कार उपनयन संस्कार कहलाता था इसके पश्चात बालक का दूसरा जन्म माना जाता था ऐसी मान्यता थी कि जन्म से पहले प्रत्येक बालक शूद्र होता था। उपनयन संस्कार के पश्चात ही वह द्विज कोटि मे प्रवेश करता था।

उपनयन संस्कार के पश्चात बालक को शिक्षा प्राप्ति हेतु आश्रमों अथवा गुरुकुल में भेजा जाता था इसके अतिरिक्त आश्रम की आवश्यकता इसलिए भी होती थी ताकि बालक संयमित होकर तपो की वृद्धि कर सके।

विद्यार्थी का गुरु के प्रति कर्तव्य तथा गुरु का स्थान बालक के माता पिता, अग्नि, वायु तथा जल में से सबसे ऊंचा था। मनु के बाह्मचरि को गुरु उपस्थिति में कम भोजन करना चाहिए, साधारण वक्त पहनना चाहिए, जल्दी उठना चाहिये और देर से सोना चाहिये।

आधुनिक भारतीय शिक्षा एवं समाज

आधुनिक भारतीय शिक्षा समाज के प्रत्येक व्यक्ति के शिक्षित होने की परिकाष्ठा पर आधारित है। वर्तमान भारतीय समाज में पुरुषों की भाँति स्त्रियों को भी समाज में स्थान प्राप्त होने लगा है। नारियों की दशा समाज में कितनी गिरी हुई थी लेकिन अब शिक्षा के ही द्वारा उनकी दशा में सुधार हो रहा है। बड़े–बड़े पदों पर नारियाँ आसीन होने लगी हैं। शिक्षित नारियाँ जीविकोपार्जन के लिए अब नौकरी भी करने लगी हैं जिससे बच्चों को परिवार में मिलनी वाली शिक्षा में बाधा उपस्थित हो रही है।

आधुनिक शिक्षा का मूल उद्देश्य सामाजिक जागरूकता का विकास करना है। क्योंकि सामाजिक जागरूकता ही सामाजिक परिवर्तन को आधार देती है। इसके अतिरिक्त समाज की कार्य–पद्धति पर वैज्ञानिक शिक्षा का अत्यधिक प्रभाव पड़ा है। इस कारण भी समाज में अनेक परिवर्तन देखे जा रहे हैं।

एंडरसन के अनुसार, यद्यपि शिक्षा एक मनुष्य के उत्थान एवं पतन को प्रभावित करती है परंतु संपूर्ण गति शीलता का एक छोटा सा भाग ही शिक्षा से संबंधित होता है।" जब कोई भी समाज गतिशील होता है तो उसके द्वारा समाज के प्रत्येक नागरिक को शिक्षित करने की दिशा में कार्य किया जाता ही।

आधुनिक भारतीय शिक्षा इस बात पर बल देती है समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति तक नि शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की पहुँच को सुगम बनाया जाए ताकि उन्हे भी समाज की मुख्य धारा से जोडा जा सके। चूंकि शिक्षा का उद्देश्य संपूर्ण परिवेश को शिक्षित करना मात्र नही बल्कि शिक्षा का स्वरूप नागरिको को आत्म निर्भर बनाने की सभी कसौटियों को पूर्ण करता हो।

समाज का एक अन्य पहलू सामाजिक मूल्यों के विकास की बात करता है। इन मूल्यों के अंतर्गत नागरिको का व्यवहार, उनके लक्ष्य, गुण आदि सम्मिलित रहते हैं। एक शिक्षित समाज के भीतर जीवन यापन करने वाले सभी लोगों के सामाजिक विकास में शिक्षा एक बहुमुखी भूमिका निभाती है।

इसके अतिरिक्त शिक्षा समाज के आर्थिक विकास को भी प्रभावित करती है। इस कार्य में शिक्षा अपने व्यवसायिक उद्देश्यो को साथ लेकर अग्रसर होती है। आधुनिक शिक्षा समाज सुधार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती आयी है एवं निरंतर इसी कार्य में लगी हुए है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन के विश्लेषण के पश्चात इस बात की पुष्टि की जा सकती है कि आधुनिक शिक्षा व्यवस्था ने वर्तमान सामाजिक परिवर्तन को अत्यन्त प्रभावित किया है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था का प्राचीन वैदिक शिक्षा के काल क्रम से निरंतर परिवर्तन होता आया है। एक ओर जहाँ समाज के पिछड़े वर्गों को शिक्षा आदि अधिकारों से वंचित रहना पड़ता था तो वही आधुनिक भारतीय शिक्षा व्यवस्था इसके बिल्कुल विपरीत समाज के प्रत्येक नागरिक की शिक्षा एवं उनके कल्याण पर आधारित है। इन्ही उद्देश्यों के साथ वैश्विक स्तर पर अनेकों शैक्षिक संस्थाएँ एवं राष्ट्रीय संस्थाएँ शिक्षा के माध्यम से सामाजिकता के विकास में प्रयासरत हैं। पिछले कुछ दशकों में भारतीय शिक्षा के स्वरूप पर यदि नजर डाले तो इसमें भी अनेकों एक परिवर्तन दिखाई देते हैं जिनका का मूल उद्देश्य सामाजिक विकास एवं राष्ट्रीय विकास के अलावा व्यक्ति के विकास पर केंद्रित रहा है।

संदर्भ सूची

1. डॉ वृंदा सेन गुप्ता, बौद्ध कालीन शिक्षा पद्धति, इंटरनेशनल जर्नल आफ एडवांसेज इन सोशल साइंसेज 4(1) 2016, AnV Publications
2. Kedāranātha Siṃha Yādava· 2006, Bharat Mein Adhunik Shiksha Ka Vikas, Arjun Publishing House (Commonwealth) ISBN:9788183300131, 8183300138
3. जे. पी. सिंह, 2016, आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, PHI Learning Pvt. Ltd
4. Dr. Madhu Parashar, Rinki Agrawal 2022 वर्तमान भारतीय समाज में शिक्षा एवं उसकी समस्याएं
5. Samaj Me Shiksha Evam Uski Samasya (Education And its Problems In Present Indian Society)-SBPD Publications.
6. Dr. Madhur Parashar, Deepa Singh, 2020, शिक्षा एवं समाज, SBPD Publications